2/7/21 सूरदास का काव्य परिचय
B.A. B.Sc. Part I

तुलसीदास की तरह सूर ने भगवान के विराट पक्षों पर अपनी लेखनी नहीं चलाई बल्कि कृष्ण के वात्सल्य और श्रृंगार तक अपने को सीमित रखा। पर इन्होंने इस सीमित क्षेत्र में ही कमाल कर दिखाया। इसका वर्णन इन्होंने ऐसे मनोयोग से किया। आचार्य शुक्ल के शब्दों में — वात्सल्य और श्रृंगार के कोनों का जितना अधिक मार्मिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है उतना किसी और कवि ने नहीं। इन कोनों का कोना-कोना वे झाँक आये। उक्त दोनों रसों के प्रवर्तक रतिभाव के भीतर की जितनी मानसिक वृत्तियों और दशाओं का अनुभव और प्रत्यक्षीकरण सूर कर सके, उतना और कोई नहीं।

वात्सल्य के क्षेत्र में सूर निराला है। बालकों की प्रत्येक प्रवृत्तियों का आकलन इन्होंने बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। बालकों में खीझना, हठ, स्पर्धा इत्यादि की प्रवृत्ति होती है। सूर के कृष्ण भी हठी हैं। वे भी चाँद के खिलौने माँगते हैं तथा खिजे माता को मनाते हैं —

मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
जैहों लोट धरनि पर अबहीं तेरी गोद न अइहों॥

कृष्ण दही चुराकर खाते हैं। दधि चोरी पकड़ी जाती है। माँ के पूछने पर मुँह का दधि पोंछकर बहाना बनाने लगते हैं तथा अनेक तरह के तर्क देते हैं। अन्त में कृष्ण कहते हैं —

यह ले अपनी लकुट कमरिया
यह लो अपनी लाठी
तेरी कौन चराबे गैया
बालक जानी बरे ही॥

कृष्ण के उत्तर में ~~[illegible]~~ वाग्विदग्धता है पर उनकी तुतली बोली में जो स्वाभाविकता है वह सूर के वात्सल्य का केन्द्र बिन्दु है।

क्रमशः —